# एक श्रापः मिथक या प्राकृतिक विपदा?

के. एन. गणेशैया

**अलामेलम्मा ने श्राप दिया था कि तलकाडू रेगिस्तान में बदल जाएगी, मालंगी के पास बह रही नदी में भंवर बन जाएगा और मैसूर राजाओं के घर कोई वारिस पैदा न होगा। वास्तविकता इनसे काफी मेल खाती है। तो क्या इन्हें श्राप का ही परिणाम माना जा सकता है?**

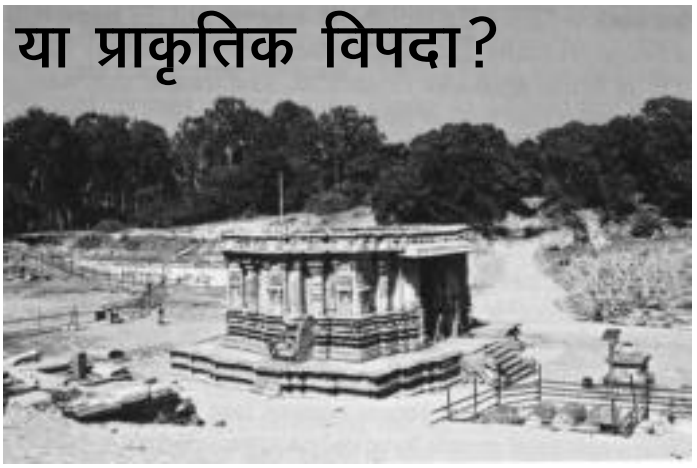

कर्नाटक में गांव का बच्चा-बच्चा 'तलकाडू के श्राप' के बारे में जानता है। 16वीं सदी से चले आ रहे लोकगीतों में भी इसका उल्लेख मिलता है। किंवदंती के अनुसार मैसूर घराने के राजा वाडेयार के हाथों विजयनगर साम्राज्य के एक शासक की पराजय के बाद उसकी पत्नी ने श्राप देते हुए कहा था -'तलकाडू रेत में बदल जाएगा और वाडेयार घराने में कोई वंशज पैदा नहीं होगा।' यह श्राप अगर आज एक मिथक बन गया है तो इसकी दो प्रमुख वजह हैं : एक, तलकाडू वाकई रेत के टीलों में दबता गया है और दूसरा, करीब चार सौ सालों से मैसूर राजघराने में कोई वारिस पैदा नहीं हुआ है।

विभिन्न सूत्रों से मिली जानकारियों और क्षेत्र के अध्ययन के बाद मैंने इस 'चमत्कार' की घटनाओं के संभावित कालक्रम का पता लगाया है। मेरा मानना है कि तलकाडू की यह घटना प्राकृतिक आपदा का परिणाम है जो इस शहर की जीवंत सभ्यता को लील गई। फिर इस घटना को बड़ी ही होशियारी से श्राप के साथ जोड़कर एक कहानी गढ़ ली गई। इस उदाहरण के माध्यम से मैं अपने इस आलेख में उस प्रक्रिया की भी चर्चा कर रहा हूं जिसके ज़रिए चमत्कार या मिथक समाज में अपना अस्तित्व बनाए रखते हैं।

वैज्ञानिक आम तौर पर मिथकों या चमत्कारों से दूर ही रहते हैं, खास तौर पर उन मिथकों से जो पहली नज़र में ही असंगत या अतार्किक नज़र आते हैं। दरअसल, किसी मिथक की यही अतार्किकता उसे समाज में प्रतिष्ठित कर देती है और तमाम तर्कों को ठेंगा दिखाते हुए यह मिथक लगातार अपनी जड़ें मज़बूत करता जाता है। आश्चर्य की बात यह है कि अगर किसी मिथक या चमत्कार के पीछे कोई तर्क है तो वह धीरे-धीरे अपनी कुदरती मौत मर जाता है क्योंकि चमत्कार के साथ तर्क के जुड़ने से आम लोगों में उसका आकर्षण नहीं रह जाता है। केवल तर्कहीन मिथक ही ज़िंदा रहते हैं; यानी जिन मिथकों का कोई स्पष्टीकरण नहीं है, वे ही टिके रहते हैं।

ऐसे में मिथकों, खासकर लंबे समय से चले आ रहे मिथकों के फैलाव के पैटर्न को जानना बेहद रोचक होगा। इस आलेख में मैं ऐसे ही एक मिथक 'तलकाडू का श्राप' की खोजबीन के अपने प्रयासों का वर्णन कर रहा हूं। यह मिथक दक्षिण भारत के लाखों लोगों के साथ मुझे भी अभिभूत किए हुए था।

## तलकाडू का श्राप

कर्नाटक में पिछली चार सदियों से तलकाडू के श्राप का मिथक चला आ रहा है। इस श्राप की मुख्य तीन बातों में से दो साफ दिखाई देती हैं जो इसे 'विश्वसनीय' बनाती हैं। पहली बात यह है कि यहां रेत का साम्राज्य फैला हुआ है। यहां के मंदिर बार-बार रेत से ढंक जाते हैं। एक विशेष पूजा और महत्वपूर्ण धार्मिक मेले के आयोजन के दौरान इन मंदिरों से रेत हटानी पड़ती है। यह मेला हाल ही में दिसंबर

2006 में आयोजित किया गया था। दूसरा प्रमुख संयोग मैसूर राजघराने के वारिस से सम्बंधित है। मैसूर के शासकों के दावानुसार वे 20 पीढ़ियों से इस श्राप को झेलते आ रहे हैं और सार्वजनिक तौर पर इसे सच भी मानते हैं; यानी उनका भी विश्वास है कि इस श्राप की वजह से उनके यहां कोई वारिस पैदा नहीं हो रहा है। श्राप के इतने स्पष्ट परिणामों की वजह से कोई तर्कशील व्यक्ति भी इसे स्वीकार लेता है। अतः इसकी गहन समीक्षा ज़रूरी है।

## श्राप कथा

तलकाडू कर्नाटक राज्य के मैसूर के निकट कावेरी नदी के किनारे स्थित एक ऐतिहासिक स्थल है। मानव सभ्यता के विकास का यहां लंबा इतिहास रहा है। यह होयसला काल (12वीं-13वीं सदी) में एक बहुत ही समृद्ध शहर था। यह गंग राजाओं के काल (छठीं सदी से नवीं सदी) और चोल राजाओं के काल (दसवीं सदी का उत्तरार्द्ध) में एक महत्वपूर्ण व्यापार केंद्र भी रहा। 15वीं सदी की शुरुआत में यह विजयनगर साम्राज्य का हिस्सा बन गया जो 16वीं सदी के अंत तक बना रहा। यहां चार वर्ग किलोमीटर के छोटे से दायरे में ही करीब एक दर्जन मंदिर बने हुए हैं। इन मंदिरों की भव्यता बताती है कि इस क्षेत्र में एक ज़माने में समृद्ध कला व संस्कृति और व्यापार व मानव गतिविधियों का अस्तित्व रहा होगा। किसी काल में व्यापार और संस्कृति का यह जीवंत केंद्र आज उजाड़ नज़र आता है। केवल कुछ वर्षों के अंतराल पर होने वाले धार्मिक मेले के दौरान ही चहल-पहल होती है। इस शहर के उजाड़ होने के पीछे भी उसी श्राप को ज़िम्मेदार माना जाता है।

माना जाता है कि यह श्राप 1610 में एक धार्मिक महिला ने उस समय दिया था जब मैसूर के वाडेयार राजा ने विजयनगर शासकों से श्रीरंगपट्टन छीन लिया था। उस दौरान विजयनगर साम्राज्य की ओर से श्रीरंगपट्टन में रंगराय शासन कर रहे थे। श्रीरंगपट्टन पर कब्ज़े के बाद मैसूर के राजा को सूचना मिली कि रंगराय की पत्नी अलामेलम्मा (कुछ लोग उसका नाम रंगम्मा भी बताते हैं) के पास हीरे-जवाहरात का ख़ज़ाना है जो दरअसल एक प्रसिद्ध मंदिर की सम्पत्ति है। इस सूचना के आधार पर मैसूर शासक ने उन हीरे-जवाहरात को अलामेलम्मा के कब्ज़े से हासिल करने के लिए कुछ सैनिक भेजे। बताया जाता है कि अलामेलम्मा ने संपत्ति देने से इन्कार कर दिया और भागकर श्रीरंगपट्टन से करीब 40 किलोमीटर दूर स्थित तलकाडू आ गई। सैनिकों ने उसका वहां तक पीछा किया। इससे कुपित होकर उसने तीन श्राप दिए और मालंगी गांव के निकट बह रही कावेरी नदी में कूद गईं। उसने जो कहा, उसका अनुवाद इस प्रकार है

1.तलकाडू रेगिस्तान में बदल जाए
2. मालंगी के पास बह रही नदी में भंवर बन जाए
3. मैसूर राजाओं के घर कोई वारिस पैदा न हो।

यह मिथक पिछले चार सौ सालों से अगर जीवित है तो इसकी तीन प्रमुख वजहें हैं :

1. मालंगी के निकट कावेरी नदी में भंवर है और अलामेलम्मा ने उसी भंवर में छलांग लगाई थी।
2. तलकाडू शहर और विशेषकर पुराने शहर पर रेत की 10 से 20 मीटर परत बिछी हुई है। होयसला काल में बने मंदिर तो 20 मीटर गहराई में दबे हैं। इससे साफ है कि इन बीते चार सौ सालों में शहर पूरी तरह रेतमय हो चुका है। कुछ मंदिरों पर जमी रेत को सार्वजनिक पूजा कार्यक्रमों के दौरान हटाना पड़ता है। बाद में वे फिर रेत से ढंक जाते हैं। नदी किनारे से उड़कर आती रेत को रोकने के लिए कई रेत-अवरोधक भी बनाए गए। युकेलिप्टस के रूप में ऐसा ही एक रेत-अवरोधक महान इंजीनियर एम. विश्वेश्वरैया ने खड़ा किया था। हाल के दिनों में रेत उड़ना कम हुई है और इसीलिए मंदिरों को रेत में से खोदकर बाहर निकालने की ज़रूरत भी अपेक्षाकृत कम पड़ने लगी है। बहरहाल, कहना पड़ेगा कि किसी समय समृद्ध और गतिशील शहर अब पूरी तरह उजाड़ हो चुका है, केवल कुछ भव्य मंदिर ही उसकी सम्पन्नता की दास्तान सुनाने के लिए रह गए हैं।
3. मैसूर का शाही परिवार 16वीं शताब्दी से उचित वारिस की समस्या से जूझता आ रहा है और वह इस विपत्ति को सार्वजनिक तौर पर भी स्वीकारता रहा है। अगर परिवार की वंशावली पर एक सरसरी निगाह भी डाल ली जाए तो

पता चल जाएगा कि समस्या वाकई गंभीर है।

इन तीन बातों में से पहली यानी श्राप क्रमांक 1 को नकारा जा सकता है क्योंकि अगर इस कहानी को एकदम सच मान लिया जाए तो जाहिर है कि नदी में पहले से ही भंवर था, अन्यथा शायद अलामेलम्मा आत्महत्या ही नहीं करती। लेकिन अन्य दोनों श्रापों के बारे में क्या कहा जाए?

ऐसे में अगर मैं कहूं कि श्राप की कहानी बकवास है, तो दूसरा और तीसरा तथ्य मुझसे पर्याप्त स्पष्टीकरण की मांग करेगा। इसीलिए मैंने पुरातात्विक आंकड़े व इलाके की भूगर्भीय विशेषताएं समझने की कोशिश की, क्षेत्र के रेतीले इलाके में बदलने के कारणों की पुरानी व्याख्याओं का अध्ययन किया और नदी से लेकर शहर तक पाई जाने वाली रेत के आकार के प्रोफाइल का आकलन किया। इसके बाद मैंने मैसूर के महल स्थित हेरीटेज विभाग से वाडेयार राजघराने की वंशावली की जानकारी हासिल की।

इनसे प्राप्त जानकारी से मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि कथित श्राप की तीनों बातें उस ज़माने में पहले से ही अस्तित्व में थीं और इन तथ्यों को कुछ स्वार्थी तत्वों ने अपने हिसाब से बड़ी ही चतुराई से 'श्रापरूपी' सूत्र में पिरो दिया। मेरा यह भी मानना है कि तलकाडू में आने वाली प्राकृतिक विपत्ति के लक्षण भी पहले से ही दिख रहे थे और इसे भांपकर ही मिथक को बढ़ावा दिया गया। हालांकि यह ज्ञात नहीं हो पाया है कि आखिर इसकी वजह क्या थी, इसके पीछे किन लोगों के क्या स्वार्थ जुड़े हुए थे। आगे मैं संक्षेप में अपने निष्कर्ष पेश करते हुए उस प्रक्रिया पर भी विचार कर रहा हूं जिससे होकर मिथक बड़ी तेज़ी से आम जनता के बीच अपनी जड़ें जमा लेते हैं।

## तलकाडू का रेत में बदलना

इसके तीन कारण हो सकते हैं -

1. भूवैज्ञानिक परिदृश्य : भूगर्भशास्त्री पहले ही बता चुके हैं कि मैसूर और होग्गेनेक्कल के बीच नदी के मार्ग के साथ-साथ एक छोटा लेकिन सक्रिय फॉल्ट ज़ोन है जो शिवन समुद्र, बी.आर. हिल्स और माले मधेश्वरा हिल्स तक फैला हुआ है। इसी वज़ह से नदी बड़ी तेज़ी से अपनी दिशा

बदलती रहती है। कई जगहों पर नदी ने बड़े ही घुमावदार मोड़ ले रखे हैं। ऐसा ही एक घुमावदार मोड़ तलकाडू शहर के पास भी है। दरअसल, यहां नदी ने अर्द्ध वृत्ताकार रूप से शहर को घेर रखा है। इसलिए इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि मानसून में जब नदी में बाढ़ आती होगी तो उसके साथ बड़ी मात्रा में रेत भी तलकाडू तक आ जाती होगी। लेकिन दूसरी ओर नदी के लेटराइट निर्मित अपेक्षाकृत कठोर किनारे की वजह से मालंगी में रेत के ढेर नहीं लग पाए। हालांकि इस किनारे से नदी का तेज़ प्रवाह लगातार टकराता रहा है। ऐसे में मालंगी का भी कटाव होता जा रहा है। इसी के परिणामस्वरूप मालंगी के पूर्व में स्थित एक भव्य मंदिर अब क्षत-विक्षत हो चुका है। उसके अवशेष गांव की गलियों में बिखरे देखे जा सकते हैं।

यहां एक अहम सवाल भी उठता है। भूवैज्ञानिक बदलाव की प्रक्रिया लाखों वर्षों से जारी है, जबकि तलकाडू में रेत के जमाव की प्रक्रिया कुछ सौ वर्ष पुरानी ही है। इसलिए यह भी संभव है कि इस रेत के जमाव की प्रक्रिया के कुछ स्थानीय कारण भी रहे हों और भूवैज्ञानिक बदलाव की सतत जारी प्रक्रिया ने बस उनकी गति में वृद्धि की हो।

2. एनीकट का निर्माण : कहा जाता है कि सन् 1336 में विजयनगर साम्राज्य के एक मंत्री माधव मंत्री ने हेमिगे के पास तलकाडू के ऊपरी क्षेत्र में कावेरी नदी पर एक एनीकट (छोटा बांध) बनवाया था। इस वजह से नदी सूख गई होगी और उसकी रेत वर्षों हवा के संपर्क में खुली पड़ी रही

होगी। तलकाडू में उत्तर-पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम से तेज़ हवाएं आती हैं। माना जाता है कि हवाओं के तेज़ झोंकों में रेत के कण तलकाडू आते रहे होंगे। डी.वी. देवराज का आकलन है कि रेत के ये कण 7 से 10 फीट प्रति वर्ष की दर से तलकाडू की ओर बढ़े होंगे।

ये दो ऐसे कारण हैं जो मेरी परिकल्पना को पुष्ट करने में मदद करते हैं। मेरा खुद का विश्लेषण है कि नदी के किनारे से दूर रेत के कणों का आकार क्रमशः छोटा होता गया है, यानी नदी के बिलकुल पास की रेत के कण अधिक बड़े हैं, जबकि तलकाडू में पाई जाने वाली रेत के कण अपेक्षाकृत महीन हैं। इससे मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि तलकाडू की रेत कावेरी नदी से ही उड़कर आई होगी। तलकाडू के पास कावेरी में जो गहरे मोड़ हैं, उसकी वजह से नदी के मार्ग में भी रेत का जमाव अपेक्षाकृत अधिक हुआ होगा, जिसने तलकाडू में रेत जमाव की प्रक्रिया को और तेज़ किया होगा।

पुरातत्वीय सर्वेक्षणों से साफ़ होता है कि तलकाडू में रेत का जमाव 16वीं सदी के उत्तरार्द्ध में शुरू हुआ था। इसलिए इस संभावना से इन्कार नहीं किया जा सकता कि रेत के तलकाडू की ओर विचलन या रेत की जमाव प्रक्रिया का आगाज़ 16वीं सदी के पहले से हो गया होगा। जानकार व समझदार पर्यवेक्षक ने भावी परिणाम का अंदाज़ा लगा लिया होगा और इस प्रकार 'श्राप' के रूप में भविष्यवाणी कर दी होगी। रेत जमाव की प्रक्रिया में तेज़ी आने पर जब लोग यहां से धीरे-धीरे जाने लगे और अंततः तलकाडू को निर्जन कर गए तो यह 'श्राप' आम लोगों के बीच मिथक के रूप में गहरे पैठ गया।

3. शहर का धंसना : तलकाडू के प्राचीन भवनों के सावधानीपूर्वक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शहर खुद ही धीरे-धीरे ज़मीन के भीतर धंसता गया है। यहां की गई खुदाई में पुराना निर्माण कार्य नदी तल से काफी नीचे पाया गया जो बिल्कुल असामान्य बात है, क्योंकि कोई भी निर्माण ज़मीन के नीचे नहीं किया जाएगा, कम से कम उस ज़माने में तो बिल्कुल भी नहीं। यानी उस समय किया गया निर्माण धीरे-धीरे धंसककर नदी तल से नीचे चला गया। उदाहरण के लिए कीर्तिनारायण मंदिर के नीचे बनाए गए ड्रेनेज पाइप मौजूदा नदी तल के काफी नीचे पाए गए। ड्रेनेज पाइप का तभी कोई मतलब है जब वे नदी तल से ऊपर लगाए जाएं। इससे साफ़ है कि ये ड्रेनेज पाइप निर्माण के समय तो नदी तल से ऊपर ही लगाए गए होंगे, लेकिन फिर वे धंसते-धंसते काफी नीचे चले गए। चूंकि यह क्षेत्र फॉल्ट ज़ोन में आता है, इसलिए यह भी संभावना है कि किसी भूगर्भीय घटना की वजह से यह क्षेत्र धंस गया होगा। जाहिर है कि इस निचली सतह की वजह से यहां नदी का बाढ़ क्षेत्र बढ़ा होगा। तलकाडू के पास नदी के पाट का विस्तृत होना इस संभावना को पुष्ट करता है।

## वारिस की समस्या

मैसूर राजघराने की वंशावली पर नज़र दौड़ाने से साफ दिखाई देता है कि वारिस (पुत्र) की समस्या लगातार बनी हुई है। मैंने पाया कि इस राजघराने के कई राजाओं की एक दर्जन से भी अधिक रानियां रही हैं, लेकिन इसके बावजूद यहां कोई वारिस पैदा नहीं हो पाया। इसी वजह से शाही परिवार को हर बार बाहर से एक राजकुमार को गोद लेना पड़ा है। हालांकि अगर राजघराने की वंशावली का गहराई से विश्लेषण किया जाए तो पता चलता है कि 19 में से केवल 10 पीढ़ियों के साथ ही वंश की समस्या रही और इसकी भी कई अन्य वजह हो सकती हैं, न कि अलामेलम्मा का श्राप। कुछ प्रमुख तथ्य इस श्राप के असर को निष्प्रभावी ठहराते हैं

1. इस कथित श्राप के कुछ ही वर्षों बाद मैसूर घराने के एक राजा के यहां पुत्र का जन्म हुआ था, लेकिन बाद में उसकी मृत्यु हो गई थी। इससे यह बात निराधार साबित हुई कि श्राप की वजह से शाही परिवार में वारिस पैदा ही नहीं होगा।

2. कम से कम तीन मामले ऐसे भी थे जिनमें परिवार का वंश आगे इसलिए नहीं बढ़ पाया क्योंकि विवाह से पहले ही वारिस की मृत्यु हो गई।

3. अधिकांश दत्तक निकट अनुवांशिक सम्बंधियों से ही लिए गए जिससे सगोत्र विवाहों को बढ़ावा मिला। संभवतः

**तलकाडू का प्रकरण प्राकृतिक विपदा का एक उदाहरण है। श्राप के रूप में की गई भविष्यवाणियां आज भी साकार नज़र आती हैं। इसी कारण यह मिथक तर्कशील और वैज्ञानिक दिमाग रखने वाले लोगों के लिए एक बड़ी चुनौती था। मगर जो भविष्यवाणियां की गई थीं, उनकी तार्किक व वैज्ञानिक व्याख्या कर इस कथित श्राप को बेमानी ठहराया जा सकता है।**

इस वजह से परिवार में निस्संतति की समस्या पैदा हुई।

इस प्रकार तथ्यों के आईने में शाही परिवार में वंश की समस्या के कारण साफ नज़र आते हैं जिनका श्राप से कोई लेना-देना नहीं हैं।

## प्राकृतिक विपदा

तलकाडू का प्रकरण प्राकृतिक विपदा का एक अद्वितीय उदाहरण है जो विकास गतिविधियों का नतीजा थी। नदी के ऊपर एक बांध के निर्माण ने एक अच्छे-भले सम्पन्न शहर को रेगिस्तान में बदल दिया जिससे धीरे-धीरे इसने व्यापारिक केंद्र का दर्जा भी खो दिया और संस्कृति भी रेत में गहरे दफन हो गई। अंततः सदियों से विकसित हो रही एक महान सभ्यता भी ज़मींदोज हो गई। आज इस निर्जन स्थल की पूर्व दिशा में एक छोटा-सा गांव स्थित है जिसे एक जीवंत शहर की स्मृति माना जा सकता है।

तलकाडू का श्राप एक अतार्किक मिथक (वैसे अधिकांश मिथक तर्कहीन ही होते हैं) के इतने सालों बाद भी जीवित रहने का अनूठा नमूना है। इसकी प्रमुख वजह यह है कि श्राप के रूप में जो भविष्यवाणियां की गई थीं, वे आज भी साकार नज़र आती हैं। इसी कारण यह मिथक तर्कशील और वैज्ञानिक दिमाग रखने वाले लोगों के लिए एक बड़ी चुनौती था। मैंने यह साबित करने की कोशिश की है कि जो भविष्यवाणियां की गई थीं, उनकी तार्किक व वैज्ञानिक व्याख्या कर इस कथित श्राप को बेमानी ठहराया जा सकता है। किसी मिथक का अस्तित्व समाज विशेष के शिक्षा और वैज्ञानिक सोच के स्तर पर निर्भर करता है। हालांकि अत्यंत विकसित और शिक्षित समाज भी मिथक के चमत्कारों से बच नहीं सके हैं। जिस समाज में धार्मिक आस्था जितनी गहरी होगी, मिथकों का प्रभाव भी उतना ही अधिक व्यापक होगा, लेकिन यह भी सच है कि कम धार्मिक आस्था वाले समाजों में भी मिथक पाए जाते हैं। इस प्रकार मिथकों के निर्माण और उनके फैलाव के बारे में दावे के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता। वे केवल मानव मस्तिष्क की एक मनोदशा को प्रतिबिंबित करते हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***